पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र० 3 आगरा छावनी

नव-सृजन

विद्यालय पत्रिका

" हमारी कल्पनाओं की उड़ान, हमारे भविष्य की पहचान।"

2025-26

PM SHRI

उपायुक्त सन्देश...

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 03, आगरा छावनी, सत्र 2025- 26 हेतु विद्यालय ई पत्रिका ' नव-सृजन' का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका, विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों का एक प्रतिबिंब है। इसके द्वारा उभरते रचनाकारों व सृजनशील प्रतिभाओं को अपनी सृजनात्मक- क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है, और उसे परिमार्जित करने का एक मौका मिलता है। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन एवं निर्माण से जुड़े सभी लोगों को बधाई देती हूं, और इसकी सफलता की मंगल कामना प्रेषित करती हूं ।मुझे पूर्ण विश्वास है कि, यह ई- पत्रिका सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

श्रीमती इंदिरा मुदगल

उपायुक्त
आगरा संभाग
केंद्रीय विद्यालय संगठन

नामित अध्यक्ष का संदेश :-

प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आदरणीय शिक्षकगण,

हमारे विद्यालय की ई-पत्रिका 'नव-सृजन' के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

'नव-सृजन' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, विचार-शक्ति और प्रतिभा का सशक्त मंच है। आज के डिजिटल युग में ई-पत्रिका के माध्यम से बच्चों को अपने विचार, लेख, कविताएँ, कहानियाँ, चित्रकला तथा नवाचार प्रस्तुत करने का उत्कृष्ट अवसर प्राप्त हो रहा है। यह मंच न केवल उनकी अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है, बल्कि आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का भी विकास करता है।

विद्यालय सदैव समग्र शिक्षा के सिद्धांत पर कार्य करता आया है, जहाँ अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, रचनात्मक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समान महत्व दिया जाता है। मुझे विश्वास है कि 'नव-सृजन' के माध्यम से हमारे विद्यार्थी अपने भीतर छिपी प्रतिभा को निखारेंगे और समाज के लिए सकारात्मक संदेश प्रसारित करेंगे।

मैं इस सराहनीय पहल के लिए विद्यालय परिवार, संपादकीय मंडल तथा सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह ई-पत्रिका निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करेगी और ज्ञान, संस्कार एवं सृजनशीलता का प्रकाश फैलाती रहेगी।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं सहित।

सादर,

(नामित अध्यक्ष)

विद्यालय प्रबंध समिति

प्राचार्य की कलम से ....

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे विद्यालय की ई-पत्रिका का यह अंक जिसका नाम नवसृजन है , आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ई-पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति एवं बौद्धिक विकास का सशक्त माध्यम है।

इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपने विचारों, भावनाओं एवं प्रतिभाओं को लेख, कविता, चित्रकला एवं अन्य रचनात्मक प्रस्तुतियों के रूप में अभिव्यक्त किया है। यह प्रयास न केवल उनकी लेखन क्षमता को निखारता है, बल्कि आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी प्रदान करता है एवं विद्यार्थियों के अंदर नव- सृजन करने की क्षमता को भी भी बढ़ाता है ।

मैं इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए संपादक मंडल, शिक्षकगण एवं सभी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह ई-पत्रिका सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक सिद्ध होगी।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(श्री उपेन्द्र कुमार)

प्राचार्य

प्रधानाध्यापिका सन्देश...

आदरणीय प्राचार्य महोदय, प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आदरणीय शिक्षकों,

विद्यालय पत्रिका के इस नवीन अंक 'नवसृजन ' के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे विद्यालय परिवार की सृजनात्मकता, परिश्रम और प्रतिभा का दर्पण है। इसके प्रत्येक पृष्ठ में हमारे विद्यार्थियों के विचार, भावनाएँ, सपने और उपलब्धियाँ प्रतिबिंबित होती हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। लेखन, कविता, चित्रकला, विज्ञान, खेल तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। यह पत्रिका उसी सृजनशील अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है।

मुझे गर्व है कि हमारे विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारियों में भी अग्रणी हैं। शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग से हम निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ। आशा है कि यह पत्रिका आप सभी को प्रेरित करेगी और भविष्य में भी आप अपनी प्रतिभा से विद्यालय का नाम रोशन करते रहेंगे।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ।

सप्रेम,

श्रीमती रेनू कुमारी

(प्रधानाध्यापिका)

संपादक मंडल

श्रीमती शोभा रानी
परास्नातक शिक्षिका
विषय –हिंदी

श्रीमती राजेश पूनिया
प्रशिक्षित स्नातिका – कला

श्रीमती सिप्पी शेखर
परास्नातक शिक्षिका
अंग्रेजी

शिवा सोनी , संगणक प्रशिक्षक

विद्यालय परिवार

S.No	Name of Employee	Designation	S.NO	Name of Employee	Designation
1	Mr. Upendra Kumar	Principal	31	Mr. Lokendra Kr. Sharma	TGT (Hindi)
2	Vacant	Vice-Principal	32	Mrs. Renu Kumari	HM
3	Mrs. Ranjana Gupta	PGT (Physics)	33	Mrs. Monika Tiwari	PRT
4	Mr. Rajesh Kumar Sharma	PGT (Eco)	34	Mr. Omvir Singh	PRT
5	Mr. Prem Kumar Bind	PGT (Physics)	35	Mrs. Tanu Singh	PRT
6	Mrs. Archana Gupta	PGT(CS)	36	Ms. Shikha Vashist	PRT
7	Mr. Naupal Singh	PGT (Chemistry)	37	Mrs. Krishna Sharma	PRT
8	Mrs. Kumudini K Pathak	PGT (Math)	38	Mrs. Pooja Bhatia	PRT
9	Mrs. Neeru	PGT(Commerce)	39	Mrs. Shalini Arya	PRT
10	Mr. Sanjeev Shukla	PGT (Chemistry)	40	Mrs. Priyanka	PRT
11	Mrs Lalita Pal	PGT (Biology)	41	Mrs Pooja	PRT
12	Mrs. Sippi Shekhar	PGT (English)	42	Mrs. Sureeli Saxena	PRT (Music)
13	Mrs. Shobha Rani	PGT(Hindi)	43	Mrs. Divya Mittal	PRT
14	Mr. Vishambhar Dayal	TGT (SST)	44	Mrs. Amreen Mansoori	PRT
15	Ms. Seema Gupta	TGT (Bio)	45	Ms Meena	PRT
16	Mr. Raghunath Prasad	TGT (English)	46	Mr. Sanjay Singh	PRT
17	Mr. Ram Avtar Singh	TGT (Math)	47	Mrs. Poonam	PRT
18	Mr. Pushpendra Singh	TGT (Wet)	48	Mr. Naresh Kumar	PRT
19	Mrs. Jyoti Yadav	TGT (English)	49	Ms Richa Sharma	PRT
20	Mrs. Rajesh Poonia	TGT (Art Edu.)	50	Mrs. Shivani Yadav	PRT
21	Mr. Sudhish Kumar	TGT (P&HE)	51	Mr.D.K Saxena	ASO
22	Mrs. Arti Verma	TGT(SST)	52	Mr. Girraj Kishore	SSA
23	Mr. Dashrath Prasad	TGT (Hindi)	53	Vacant	JSA
24	Ms. Neetu Rathor	TGT (Sanskrit)	54	Mr. Laxman Singh	Sub Staff
25	Mrs. Manju	TGT (Hindi)	59		
26	Mr. Sarvesh Kumar	Librarian	60		
27	Mrs. Sweta Sonker	TGT (Bio)	60		
28	Mr. Gajendra Singh Dharmesh	TGT (Math)			
29	Mrs. Afroj	TGT (SST)			
30	Mrs. Mamta Kumari	TGT (Math)			

हिंदी अनुभाग

सरस्वती वंदना

वीणा वाली माँ शारदे,
ज्ञान की तुम हो धार।
अज्ञान का तम दूर करो,
भर दो जीवन उजियार।

श्वेत वस्त्र, श्वेत कमल,
मुख पर शांति छाए।
बुद्धि, विवेक और संस्कार,
माँ! हम सब को पाए।

पढ़ना, लिखना, समझना,
सत्य राह दिखलाओ।
माँ सरस्वती, कृपा करो,
जीवन सफल बनाओ।

आज के समय में छात्रों का गिरता नैतिक स्तर

आज का युग तकनीक और प्रतिस्पर्धा का युग है। आधुनिक सुविधाओं और सोशल मीडिया ने छात्रों के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। पहले शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि संस्कार और नैतिक मूल्यों का विकास भी था।

आज यह उद्देश्य धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है। अनेक छात्र परिश्रम के स्थान पर शॉर्टकट अपनाने लगे हैं। नकल, अनुशासनहीनता और जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग छात्रों को वास्तविक जीवन से दूर कर रहा है।
इस गिरते नैतिक स्तर के लिए केवल छात्र ही नहीं, बल्कि परिवार, विद्यालय और समाज भी जिम्मेदार हैं। माता-पिता को बच्चों को समय देना चाहिए और शिक्षकों को पाठ्यक्रम के साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए।

यदि नैतिक शिक्षा को पुनः महत्व दिया जाए, तो छात्र न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी बन सकते हैं।

रात का संग

जब चांद हल्के से मुस्काए ,तारे पीछे-पीछे आए।

हवा धीरे-धीरे गीत सुनाए, बादल थोड़े दूर सरक जाए।।

चांद कहे- "मत डरना रे"

तारे बोले - "हम साथ हैं तेरे"।

अंधेरा चाहे जितना फैल जाए ,

रोशनी फिर भी राह दिखाए।

रात भले हो थोड़ी भारी,

चांद तारे देते प्यारी यारी ।

सुबह की किरण जब मुस्काए,

रात की सारी थकान मिट जाए ।

और जब नींद धीरे आती, ,तारों की झंकार मन को सुलाती।

चांद की चांदनी जब छू जाए,

सपना हर दिल में खिल उठ जाए।।

अदिति सेंगर

कक्षा - 8वीं 'स'

लक्ष्य

वह आकाश **क्या** जिसमें तारे न हो,

वह सागर क्या जिसमें गहराई ना हो,

वह पथ क्या जो पथरीले ना हो,

वह जीवन क्या जिसमें संघर्ष ना हो,

वह सूर्य **क्या** जिसमें तपन ना हो,

वह चांद क्या जिसमें शीतलता ना हो,

वह बरसात **क्या** जिसमें बिजली ना हो,

वह जीवन क्या जिसमें प्रकाश ना हो,

वह बाग क्या जिसमें हरियाली ना हो,

वह डाली **क्या** जिसमें कांटे ना हो,

वह तथ्य **क्या** इसमें तर्क ना हो,

वह वस्तु क्या जो संभव न हो,

वह कहानी क्या जिसका अंत न हो,

वह पतन क्या जो आजाद ना हो,

वह कर्म क्या जिसने लगन ना हो,

वह जन्म क्या जिसका कोई लक्ष्य ना हो।।

देवेंद्र सिंह

नन्हे कदम

बस्ते में बंद है सपने हमारे,

हम हैं नन्हे चमकते तारे।

कलम हमारी ताकत है,

किताबों से ही राहत है।

खेल-कूद और अच्छी पढ़ाई,

साथ मिलकर करना है भाई।

सच्चाई की राह चलेंगे,

हम भारत का नाम करेंगे।

जय हिन्द, जय भारत।

नाम – Tejas

कक्षा – II-C

मेरे सपनों की उड़ान

मुझे आसमान देखना बहुत अच्छा लगता है। मैं रोज

छत पर जाकर पक्षियों को उड़ते देखती हूँ। फिर

सोचती हूँ, “काश मैं भी उड़ पाती!”

एक दिन मैंने सपना देखा। मेरे कंधों पर

छोटे-छोटे पंख आ गए। मैं आसमान में

उड़ने लगी। फिर मैंने नीचे अपना स्कूल देखा।

तभी मेरी माँ की आवाज़ आई, “उठो बेटी,

स्कूल का समय हो गया।” मैंने माँ को अपना

सपना बताया। माँ मुस्कुराई और बोली,

“सपने सोते हुए नहीं, बल्कि पढ़ते हुए पूरे होते हैं।”

अब मैं रोज मन लगाकर पढ़ती हूँ। मुझे

लगता है मेरी मेहनत मेरे सपनों को उड़ान देगी।

By – Pavnika

2C

महाभारत की सीख

महाभारत में एक गहरा प्रसंग आता है— पांडु की मृत्यु के बाद कुंती और माद्री दोनों सती होना चाहती थीं, पर माद्री ने कहा कि "यदि आप सती हो गईं और मैं रह गई, तो मैं आपके तीनों बच्चों का पालन वैसे नहीं कर पाऊँगी जैसे आप कर सकती हैं। और अगर मैं सती हो जाऊँ और आप रहें, तो आप मेरे दोनों बच्चों— नकुल और सहदेव— को भी अपने ही बच्चों की तरह पाल लेंगी। दुनिया यही मानेगी कि कुंती के पाँच पुत्र हैं।" और हुआ भी यही। एक स्त्री, अभाव, जंगल, संघर्ष और विधवापन— इन सभी परिस्थितियों में पाँच ऐसे पुत्र तैयार करती है जो आगे चलकर 'धर्म के स्तंभ' कहलाते हैं। जिस दिन भगवान को यह निर्णय करना पड़ा कि वे किसके पक्ष में खड़े होंगे, भगवान ने पांडवों का पक्ष चुना— क्योंकि एक स्त्री ने कठिनाइयों में भी सही 'लालन–पालन' किया था। दूसरी ओर हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र जन्मांध थे, और गांधारी ने भी अपने पति की परिस्थिति देखकर अपनी आँखों पर स्वेच्छा से पट्टी बाँध ली। और जब घर में पिता पहले से अंधा हो और माँ भी अंधी होने का निर्णय ले ले, तो उस घर में 100 कौरव पैदा होते हैं— यह भी लालन–पालन का ही परिणाम है। महाभारत यह सिखाती है कि पालन-पोषण केवल शरीर पालना नहीं, बल्कि चरित्र, विवेक और भविष्य बनाना है।

महाभारत आज भी यही सिखाती है— पैरेंटिंग भविष्य बनाती है।

कुंती ने अभावों में भी पाँच धर्म–पुत्र बनाए।

गांधारी ने आँखें बंद कर लीं और सौ कौरवों का जन्म हुआ।

(फेसबुक से साभार)

पर्यावरण

आओ मिलकर पेड़ लगाओ,

पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

प्लास्टिक को दूर भगाओ,

पर्यावरण को शुद्ध बनाओ।

कूड़ा कचरा मत फैलाओ,

धरती को सुंदर सजाओ।

एक तो है धरती हमारी,

उसमें बसती दुनिया सारी।

धरती करती यही पुकार,

हरा-भरा कर दो संसार।

हर दिन इसका मान बढ़ाओ,

पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

निवेदिता II C

सर्दी आई

वर्षा बीती, सर्दी आई,

लाओ कंबल और रजाई।

स्वेटर की भी बारी आई,

गरम चाय सबके मन भाई।

दो माँ पूरी खाने को,

पानी गरम नहाने को।

खूब सुहानी लगती धूप,

सूरज का है बदला रूप।

By Rishi Meena

3A

भारत

भारत तू है हमको प्यारा, तू है सब देशों से न्यारा।

मुकुट हिमालय तेरा सुंदर, धोता तेरे चरण समुद्र।

गंगा यमुना की है धारा, जिनसे है पवित्र जग सारा ।

अन्न, फूल, फल, जल हैं प्यारे, वृक्षों से फल लदाहार न्यारे ।

राम कृष्ण से है अभिभाषी, तेरे सभी पुत्र हैं नामी ।

हम सदैव तेरा गुण गाएँ, सब विधि तेरा यशगान करें ।

By Shivangi shukla 3 B

झंडा

झंडा हमारा सबसे न्यारा,

सबको ही लगता यह प्यारा।

हमारे देश की शान है यह,

हमारे देश का मान है यह

हमारे देश की जीत है यह,

इसको कभी न झुकने देंगे,

इसको कभी न रुकने देंगे।

आगे बढ़ता यह जाएगा,

सारे जगत को आगे यह ले जाएगा॥

By Uday Pratap 3 B

भारत की भाषा हिंदी

मैं भारत मां के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूं,
मैं सब की जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूं।
मेरी बोली में मीरा ने मनमोहन काव्य सुनाया है,
कवि सूरदास के गीतों में मैंने कम मान न पाया है।
तुलसीकृत रामचरितमानस मेरे मुख में चरितार्थ हुई ।
विद्वानों संतों की वाणी गुंजित हुई साकार हुई।
भारत की जितनी भाषाएँ सब मेरी सखी सहेली हैं,
हम आपस में क्यों टकराएं ,हम सब बहने भोली भाली हैं।
सब भाषाओं के शब्दों को मैंने गले लगाया है ,
इसलिए भारत के जन-जन ने मुझे अपनाया है।
मैंने अनगिनत फिल्मों में खूब धूम मचाई है,
इसलिए विदेशियों ने भी अपनी प्रीति दिखलाई है।
सीधा-साधा रूप ही मेरा सबके मन को भाता है,
भारत के जनमानस से मेरा सदियों पुराना नाता है ।
मैं भारत मां के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूं,
मैं सब की जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूं ।।

परी
सातवीं स

देशभक्त की चाह

सर्प चाहते हैं चंदन को ,
अधम चाहते हैं वंदन को ,
लोभी चाहे माया धन को
कामी केवल कोमल तन को ,
काम किए बिन दाम चाहिए,
धन वैभव आराम चाहिए,
ठौर ठिकाना धाम चाहिए,
यहां सभी को नाम चाहिए,
बंदी को मुक्ति की चाहत,
चोरों को युक्ति की चाहत ,
स्वामी को भक्ति की चाहत,
शासक को शक्ति की चाहत ,
यहां चाहते बहुत बड़ी हैं,
प्रतिपल है, हर एक घड़ी है,
हिमशिखरों सी बड़ी चाहतें ,
स्वार्थ लिए हैं खड़ी चाहतें।

मिलता जाए उतनी चाहे,
बूंदे सागर जितना चाहे ,
लेकिन फिर कुछ लोग यहां हैं,
जो बस केवल इतना चाहे,
उनके मन की रक्षा हेतु ह्रदय शून्य में भले समाए,
आन बान और शान तिरंगा यूं ही अंबर तक लहराए ||

लकिता सोलंकी

8th बी

पढ़ाई और मस्ती का बैलेंस

हमारे टीचर्स थोड़े सख्त जरूर हैं, लेकिन वो हमें दिल से प्यार भी करते हैं। गणित (Maths) के मुश्किल सवालों से लेकर इतिहास की कहानियों तक, यहाँ हर दिन कुछ नया सीखने को मिलता है। लेकिन सच बताऊँ? सबसे ज्यादा इंतज़ार तो 'लंच ब्रेक' का होता है! जब सब दोस्त मिलकर अपना टिफिन शेयर करते हैं, तो खाने का स्वाद दोगुना हो जाता है।

Apoorwa Singh

10th C

प्यारा स्कूल

सुबह सवेरे उठते हम,

स्कूल की ओर बढ़ते हम।

पढ़ना-लिखना और खेलना,

नई बातें रोज सीखना।

टीचर हमें सिखाते हैं,

अच्छे बच्चे बनाते हैं।

मेहनत से हम पढ़ेंगे,

आगे खूब बढ़ेंगे।

Apoorwa singh

10th C

आजादी की रीत

लाल रक्त से धरती नहाई,

श्वेत नभ पर लालिमा छाई।

आजादी के नव उद्घोष पर ,

सबने वीरों की गाथा गाई।

गांधी, नेहरू ,पटेल, सुभाष की,

ध्वनि चारों ओर है छाई।

भगत, राजगुरु और सुखदेव की,

कुर्बानी से आंखें भर आई।

ए भारत मां तुझे अनोखी,

और अद्भुत मां न हमने पाई ।

हमारे रगों में तेरे कर्ज की,

एक-एक बूंद समाई।

माथे पर है बांधे कफन ,

और तेरी रक्षा की कसम है खाई।

सरहद पर खड़े होकर,

आजादी की रीत निभाई।

तेजस 8c

प्रदूषण

प्रदूषण की मार,

हम सबकी हार।

वायु, जल, मिट्टी, सब हैं खराब,

प्रदूषण की वजह से हो रहा है नुकसान ,अभाव।

धुआं-धुआं शहर, जहाँ हम रहते हैं,

प्रदूषण के कारण हम बीमार रहते हैं।

पेड़ काटे जा रहे, जंगल हो रहे सून,

जीव-जन्तु परेशान, बस रहे हैं दूर-दूर।

प्लास्टिक का कचरा, फैल रहा है चारों ओर,

समुद्र में भी जाकर, हो रहा है विनाश घोर।

गाड़ियों का धुआं, जहाँ-तहाँ फैल रहा,

स्वास्थ्य पर असर, सब पर है पड़ रहा।

आओ मिलकर हम, प्रदूषण रोकें,

पेड़ लगाएं, स्वच्छता को अपनाएं।

सब मिलकर प्रयास करें, स्वच्छ भारत बनाएं,

प्रदूषण को दूर भगाएं, हरा-भरा भारत बनाएं।

निधि छोंकर

9 C

कामयाबी जरूर मिलेगी

अगर तुम्हारी मेहनत में है दम ,
अगर तुम्हारे हौसले हैं बुलंद ,
तो कामयाबी जरूर मिलेगी ।
आती है मुश्किलें हजार तो भी,
तुम मत मानना हार,
क्योंकि तुम्हारे सपने हैं बड़े ।
तो तुम्हें उठाना पड़ेगा मुश्किलों का भार ।
अगर तुम्हारी वाणी में है मिठास ,
अगर तुम्हारा दिल है साफ,
तो कामयाबी जरूर मिलेगी।
हार मिले तो रुकना मत, लोग निंदा करे तो झुकना मत, क्योंकि निंदा होती है उसी की,
जिसमें होती है कोई खास बात।
अगर तुम्हारा लक्ष्य है साफ, अगर तुम्हें खुद पर है विश्वास ,
तो कामयाबी जरूर मिलेगी ।।

पूर्वा चाहर नवीं अ

संस्कृत अनुभागः

वृक्षा: सत्पुरुषा: इव

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे ।

फलान्यपि परार्थाय वृक्षा: सत्पुरुषा: इव ॥

भावार्थ- वृक्ष छाया दूसरों के लिए करते हैं , स्वयं धूप में रहते हैं , फल भी दूसरों के लिए हैं , वृक्ष सज्जनों की तरह होते हैं ।

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रद: ।

दशह्रदसम: पुत्र: दशपुत्रसमो द्रुम: ॥

भावार्थ- एक जलकुंड दस कुओं के समान है , एक तालाब दस जलकुण्डों के समान है , एक पुत्र दस तालाबों के समान है , तथा दस पुत्रों के समान एक वृक्ष है ।

अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम् ।

सुजनस्येव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिन: ॥

भावार्थ- अरे ! सभी प्राणियों का आश्रय भूत इन वृक्षों का जन्म श्रेष्ठ है । ये वृक्ष सज्जन के समान हैं जिनसे प्रार्थना करने वाले याचक निराश होकर नहीं जाते ।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षा: परोपकाराय वहन्ति नद्य: ।

परोपकाराय दुहन्ति गाव: परोपकाराय इदं शरीरम् ॥

भावार्थ- परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं , नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं । गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं , यह शरीर परोपकार के लिए है ।

पुष्प-पत्र-फलच्छाया-मूल-वल्कल-दारुभि: ।

धन्या महीरुहा येषां विमुखा यान्ति नार्थिन: ॥

भावार्थ- जिनके फूल, पत्ते, फल, छाया , जड़ , छाल व लकड़ियों से याचक निराश नहीं जाते । वे वृक्ष धन्य हैं ।

तेजस

आठवीं स

भारतवर्षे विज्ञानस्य प्रगति:

(मानवजीवनस्य सर्वक्षेत्रेषु विज्ञानस्य उपादेयता अस्ति,

भारतवर्षे विज्ञानस्य परम्परा अतीव सुप्राचीना,

विज्ञानं विहाय समाजस्य उन्नति: न सम्भवति।)

पृथिव्यां भारतं एक: महान् देश:। भारतं ॠषीणां देश:। विभिन्नेषु कालेषु बहव: ॠषय: अस्मिन् प्राच्यभूखण्डे जन्मग्रहणं कृतवन्त:। तेषां मुखनिसृता: मन्त्रा: विज्ञानसम्मता:। वेदेषु उपनिषत्सु च वैज्ञानिकं रहस्यं विद्यते। गणितविज्ञान प्रसङ्गे वैदिकयुगस्य वेदाङ्ग-ज्योतिषं प्रसिद्धम्। सूत्रमाश्रत्य सम्प्रति गणितस्य एका धारा प्रचलति। आर्यभट्ट:-ब्रह्मगुप्त:-भास्कराचार्य: प्रमुखा: महान्त: गणितशास्त्रविशारदा: आसन्। चिकित्साविज्ञानक्षेत्रे भारतस्य महती परम्परा अस्ति। अथर्ववेदे आयुर्विज्ञानस्य चर्च्चा दृश्यते। अश्विनीकुमारौ देववैद्यौ आस्ताम्। भगवान् धन्वन्तरी लोकानां रोगानिवारणार्थमवतारं गृहीतवान्। चरकसुश्रुतप्रभृतय: चिकित्सका: चिकित्साशास्त्रं विरच्य ख्यातिमुपार्जितवन्त:। यन्त्रविज्ञानक्षेत्रे विश्वकर्मा-नल-प्रमुखा: यन्त्रिण: प्रसिद्धा: अभवन्। प्रसिद्धयन्त्रिण: नलस्य साहाय्येन रामचन्द्र: अतलसागरे सेतुनिर्माण कृतबान् इतिं पौराणिकी वार्ता प्रचलति। सूचनाविज्ञानक्षेत्रे भारतम् अतीव समृद्धम् आसीत्।

विमानविद्यायाम् भारतीया: सुनिपुणा: आसन्। पुष्पकविमानं चालकस्य इच्छानुसारेण परिचिलितमासीत्। भौतिकविज्ञान-महाकाशविज्ञानं क्षेदो अपि। आर्यभट्ट-वराहमिहिर-ब्रह्मगुप्त-भास्कराचार्य सामन्तचन्द्रशेखर प्रभृतय: भारतवर्षस्य वैज्ञानिका: अद्यापि विश्वविश्रुता:। भारतवर्षस्य इमामेव परम्परामाधारीकृत्य सम्प्रति विज्ञानस्य जययात्रा अनुदिनम् उद्घोष्यते। सम्प्रति गणितविज्ञाननस्य महती आवश्यकता अनुभूयते। आयुर्विज्ञान-यन्त्रविज्ञान-पदार्थविज्ञान-रसायनशाश्त्र-दर्शनशाश्त्राणां-गणितस्यच प्रयोजनीयता अस्ति। भारतवर्षस्य रर्क्षार्थम् आवश्यकीयानां क्षेपणास्त्रप्रभृतिनां निर्माणार्थम् पदार्थविज्ञानस्य साहायमपेक्षते। परिवेशस्य सुरक्षार्थं उद्भिद्विज्ञानस्य प्राणी विज्ञानस्य च आवश्यकता अनुभूयते। अस्मिन् क्षेत्रे सार् जगदीशचन्द्र बोष: चिरस्मरणीय:। उत्कलस्य प्राणकृष्ण परिजा महोदया: महान् परिवेशविज्ञानी आसीत्। आधुनिकभारते चिकित्साविज्ञानक्षेत्रे आधुनिक भारतीयवैज्ञानिका: बहुप्रशंसनीयं कार्यं कुर्वन्ति। कुष्ठ, कर्कट, यक्ष्मा प्रभृतीनां दु:साध्यरोगाणामपि उपशमनार्थं चिकित्सकै: फलप्रद उपाय: आविष्कृत:। विंशशताब्द्यां कम्प्यूटर यन्त्रस्य कार्यम् आश्चर्यजनकम्। एतद् यन्त्रविज्ञानास्य फलम्। सम्प्रति कम्प्यूटर द्वारा बहूनिदुष्कराकार्याणि सम्पाद्यन्ते। यन्त्रविज्ञानेन महतां प्रासादानां सेतूनाम् निर्माणं भवति। आधुनिकभारते आचार्य विश्वेश्वराया विश्विविदित: यन्त्रविज्ञानविद् अभवत्। सम्प्रति विज्ञानस्य युग:। विज्ञानं बिना मानव जीवनम् अपरिपूर्णम्। अत: विज्ञानं पठनीयम्।

संगृहीतम्

हस्तकुटुम्बम्

एष: स्नेहालु: तात: (अङ्गुष्ठ:)

निकटेनिवसति ननु माता (तर्जनी)

ज्येष्ठा पुत्री दीर्घतमा (मध्यमा)

तस्या: भगिनीमनोरमा (अनामिका)

कनिष्ठबाला अन्ते च (कनिष्ठका)

हस्तकुटुम्बं मम पश्यतु भावान्।

हस्तद्वयेन प्रणमामि अहम्

आशीर्वादं इच्छामि अहम्॥

संगृहीतम्

अनुकृति मुद्गल

कक्षा- षष्ठ:स

भारत भक्ता:

वयं बालका: भारतभक्ता:

वयं बालिका: भारतभक्ता:।

वयं ही सर्वे भारतभक्ता:

पृथ्वीं स्वर्गं जेतुं शक्ता:॥

वयं सुधीरा: वयं सुवीरा:

हृष्टमानसा: पुष्टशरीरा:

भूरि पठामो भूरि लिखामो

सर्वे वयं जनहिते नियुक्ता:

जाति-धर्म-मत भेद त्यक्त्वा

भारतवर्षं पूज्यं मत्वा

भगवद्भावं हृदये धृत्वा

भारतसेवायामनुरक्ता:।

संगृहीतम्

ओजस्वी सिंह

कक्षा- नवीं स

मम प्रियं भारतम्

शक्तिसम्भृतं युक्तिसम्भृतं

शक्ति- युक्तिसम्भृतं भवतु भारतम्॥

शस्त्रधारकं शास्त्रधारकं

शस्त्र- शास्त्र धारकं भवतु भारतम् ॥

कर्मनैष्ठिकं धर्मनैष्ठिकं

कर्म धर्मनैष्ठिकं भवतु भारतम्॥

भक्तिसाधकं मुक्तिसाधकं

भक्ति-मुक्तिसाधकं भवतु भारतम्।

संगृहीतम्

तनिष्का मीना

सातवीं ब

संस्कृत भाषा

संस्कृतभाषा भारते प्रचलति सर्वासाम् भाषाणां जननी, बहुप्राचीन कालात् इयं भाषा अस्माकं देशे विराजते । अस्माकं सर्वप्राचीन: ग्रन्थ: वेद: संस्कृत भाषया लिखितम् अस्ति । एतद् व्यतीतं वहूनि काव्यानि, शास्त्राणि च संस्कृतेन रचितानि । संस्कृतभाषायां विविधानि नीतिवाक्यानि सन्ति। एतेषां प्रयोगेण अस्माकं जीवनं सुखकरं भवति। एतत् अनन्तर संस्कृतभाषा सरला, मनोहरा च। प्राचीनभारतवर्षे जना: संस्कृतभाषया वार्त्तालापम् अकुर्वन्। अधुना अपि संस्कृतं प्रति जनानाम् आग्रह: अस्ति। संस्कृतभाषा अस्माकं संस्कृते: आधारभूता इव। अत: वयं सर्वे भारतीया: संस्कृतं पठेम्। साधुना उत्तम्-'भारतस्य प्रतिष्ठायै महामूलं हि संस्कृतम्। भारते निष्फलं जन्म संस्कृताध्ययनेनविना'।

संगृहीतम्

लविशा

कक्षा- आठवीं ब

अनुशासनम्

मा कुरु दर्पं मा कुरु गर्वं

मा भव मानी मानय सर्वम्।

मा भज दैन्यं मा भज शोकं

मुदितमना भव मोदय लोकम्॥1।

मा वद मिथ्यां मा वद व्यर्थं

न चल कुमार्गे न कुरु अनर्थम्।

पाहि अनाथं पालय दीनं

लालय जनती- जनक विहीनम्॥2।

तनयं पाठय तनयां पाठय

शिक्षय सुगुणं दुर्गुणं वारय

कुरु उपकार कुरु उद्धारम्

अपनयं भारं त्यज अपकारम्॥3।

मा पिब मादक वस्तु अपेयम्

मा भज दुर्व्यसनं परिहेयम्।

मा नय क्षणमपि व्यर्थ समयं

कुरु सकलंनिजकार्य सभथम्॥4।

संगृहीतम्

रिषिता शर्मा

कक्षा- सातवीं'अ'

वनम्

वनं काननं अरण्यं इति नाम्ना प्रसिद्धं स्थलं भौगौलिक रीत्या अत्यावश्यकम् अनिवार्यम् च । उन्नतवृक्षे: गुल्मै: भयंकरं जीवनजन्तुभि: आवृत: विस्तृत: भूभाग: हि वनम् इति संज्ञां लभते भूमंडले वनानि प्राणिनां बहुपकारं कुर्वन्ति । इमानि औषधानां स्त्रोत: एव । विविधा: वृक्षा: अस्मभ्यं सर्वप्रकारेण अनेकानि वस्तूनि यच्छन्ति । पर्यावरण संतुलने तु वनानां योगदानं अवर्णनीयं अस्ति । वन्यं जन्तूनाय आवास स्थानाम् इदं काननं । वनै: जन्तव: तथा जन्तुभि: वनानि शोभन्ते । वनेषु विभिन्न प्रकाराणि वनानि दृश्यन्ते । कानिचन शुष्कानि आपराणि च सर्वदा आद्राणी । ऋतूनां अनेकेषु रूपेषु परिवर्तनं उचित समये वर्षागमन च इत: अपि लाभदायकानां योगदाने वनानि अग्रेसराणि । जीवविज्ञानिनां कृते वनानि उत्कृष्ट

प्राथमिक विभाग में वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित गतिविधियाँ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

स्वतंत्रता दिवस समारोह

एक भारत श्रेष्ठ भारत एवं कला उत्सव

Joint Commissioner (Acad.) KVS HQ, Visit to Our School

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

बालवाटिका-3

ENGLISH SECTION

The life

Life is the fleeting, precious canvas stretched between the moment we arrive and the moment we arrive and the ultimate destination: silence. Every day is a test for us, where we always face one of two results: a clear lesson or a small defeat. When a body enters this world, they arrive full of wonder completely unaware of the many hard times that wait ahead. God had given us this life to do something for others, for our well - being and we should take it as a blessing and opportunity to achieve something. Life is everywhere we look, woven into the fabric of creation- from the tiny specks we cannot see to the great beasts and the thoughts of humankind. Science tells us many theory of giving birth from the mother's womb. But only he knows how he created this special mechanism called life. Destiny and future are not written in any form because we have to create this and decide what our future would look like.

The true maturity is when you understand happiness and pain are two sides of the same beautiful coin. There will be situations where you have to stand up for yourself because there will be no one with you right there. Nobody knows when the call of death would come and who is next on the list. After you are gone, a sudden silence will fall. Your family's sorrow will not just be sad; it will be an empty space where your voice used to be. And gradually all your memories will fade out. This raises a simple, crucial question: What do we truly take with us? What truly matters is not the size of your bank account or the number of friends you collected. In the end, everyone leaves this world the same way: alone , buried beneath the soil, carrying only a treasure of memories.

Challenges will go and come this is the ultimate rule of life. And we have to face these problems in any situations. Time and tide wait for no one. Whether you are pulled under by the dark currents or simply vanish into the great clock of time, it marches on without you. Do not let the rules of others define your worth or your journey. Listen to that quite inner voice – the one that knows what truly brings you joy – and choose to live your life on your own terms. True happiness is not only found by following the crowd; it is found by following yourself. In that final moment, at your very last breathe only you remain – alone with the entire story you have lived. Knowing what it feels like to be in pain is exactly why we try to be kind to others. At the end, no one is there but you. The world doesn't notice when your life stops, and that final silence belongs to you alone.

Smruti Priya Baral
Class – ix, Sec (b)

SURE

Read but write more,
Talk but think more,
Play but study more,
I promise you will succeed sure.
Eat but chew more,
Weep but laugh more,
Sleep but work more,
I promise you will succeed sure.
Punish but pardon more,
Spend but save more,
Consume but produce more,
I promise you will succeed sure.
Hate but love more,
Order but obey more, 99
Quarrel but love more,
I promise you will succeed sure.

MUSKAN SHARMA
IX-C

"This is not the end of your story."
"You are stronger than this pain."

After a long month, I was finally allowed to go home. The doctor warned me not to walk too much for at least a week and to take complete rest. Physically, I was weak — but mentally, something inside me had changed forever.

The very next morning, when I opened my eyes, one thought echoed inside me: school. I wanted to return to my routine, to my normal life, to that version of me who didn't feel broken. When I told my father that I wanted to go, he immediately refused. He was worried for me, he wanted to protect me — but I wanted to protect my spirit.

I took a deep breath, gathered all the courage inside me, took a painkiller and gently stood up. Every step felt like fire spreading through my leg, but I kept walking. I didn't walk with the confidence of a healed body — I walked with the determination of an unbroken heart.

I reached school that day — and the next day, and the next — not because I was perfectly fine, but because I refused to surrender to pain.

Today, when I look back, I don't remember that incident as an accident —
I remember it as the moment when I discovered who I truly am.

💫 This experience taught me something that books cannot teach:

✔ Pain is not the enemy — giving up is.
✔ Strength is not the absence of struggle — it is the victory over it.
✔ Scars do not make us weak — they prove we were strong enough to survive.

Whenever life becomes difficult, whenever challenges feel impossible, I remind myself:

🔥 Your body might shake, but your spirit must stand tall.
🔥 Tough times do not last, but tough people do.
🔥 If you truly decide to win, then no force in the world can defeat you.

🌟 A Journey of Courage – The Story That Shaped Me

By: Rishita Sharma.

There are moments in life that appear suddenly, without warning, and change us forever. Some experiences hurt us, some break us, and some rebuild us into someone stronger than we ever imagined. The incident I am about to share with you is not just a memory – it is the turning point of my life.

I am Rishita Sharma and I live in Agra, Uttar Pradesh.

It was a beautiful spring afternoon. The sun was warm but gentle, the breeze carried the fragrance of blooming flowers, and the world looked peaceful – as if nothing could possibly go wrong. My father and I were traveling on our scooty, heading somewhere together. I sat behind him comfortably, feeling protected and safe. I had no idea that within the next few seconds, my strength, my emotions, and my courage would be tested in the toughest way possible.

As we were overtaking a car, our scooty suddenly slipped.
Everything happened too fast – there was no time to think, no time to understand. One single moment was enough to turn calmness into chaos.

My father suffered only small scratches, but I was not that fortunate. A sharp, unbearable pain shot through my leg. When I looked down, I saw a deep cut – blood flowing so rapidly that it felt like time had stopped. The world around me began to fade, voices dissolved into silence, and I collapsed as darkness surrounded me.

When I slowly opened my eyes again, I was no longer on the road. I was in a hospital – bright lights above me, machines beeping, doctors rushing, nurses talking quickly. I felt confused, weak and terrified. The doctors informed me that I had lost a dangerous amount of blood and had been immediately admitted to the ICU. I was taken for an operation, and for the next month, the hospital became my world.

That month was one of the hardest battles of my life.

Every day came with injections, bandages, medicines, pain, tears, and questions. Nights were the worst – silent, heavy and full of fear. I often stared at the ceiling and wondered:

"Why did this happen to me?"
"Will I ever be normal again?"
"Will I ever be able to run, walk or just live freely?"

Some days I felt brave. Other days I felt broken. But even in the darkest moments, a tiny spark inside me kept whispering:

DREAMS IN A SCHOOL BAG

A school bag is more than a bundle of books and stationery; it carries dreams. Inside it lie hopes of becoming a doctor, teacher, scientist, artist, or leader. Every morning, students walk to school with this bag on their shoulders, holding not just lessons but also responsibilities, expectations, and silent prayers.

Within its pockets are late-night efforts, early-morning struggles, and the courage to face exams and failures. Each notebook records knowledge, while every mistake teaches resilience. Though the bag may appear ordinary, the dreams it carries are extraordinary.

For many students, education is a bridge to a better future. With proper guidance, encouragement, and self-belief, these dreams slowly take shape. When society supports learners and values effort over marks, dreams grow stronger. Truly, every school bag carries the power to shape tomorrow, one lesson and one dream at a time.

BEING TEACHER

I enter the class with hope so bright,
A lesson planned from left to right.
But faces stare—some half asleep,
Some scrolling worlds their phones still keep.

"Good morning, class!" I cheer aloud,
A yawn replies—bold, strong, and proud.
One student asks, "Is this in exam?"
The room wakes up—*now* everyone can!

Homework? Ah yes, that tragic tale,
"My dog ate it," "My printer failed."
One swears the file was almost sent,
Another blames the government.

Notes are shared at lightning speed,
Just one day before they're truly needed.
Attendance? "Present, ma'am!" they cry,
While mentally they've said goodbye.

Marks, mistakes, and teenage life.
For one fine day, when you've all flown,
This noisy class will feel like home.

भारत स्काउट एवं गाइड्स

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित गतिविधियां

परीक्षा पे चर्चा 2026

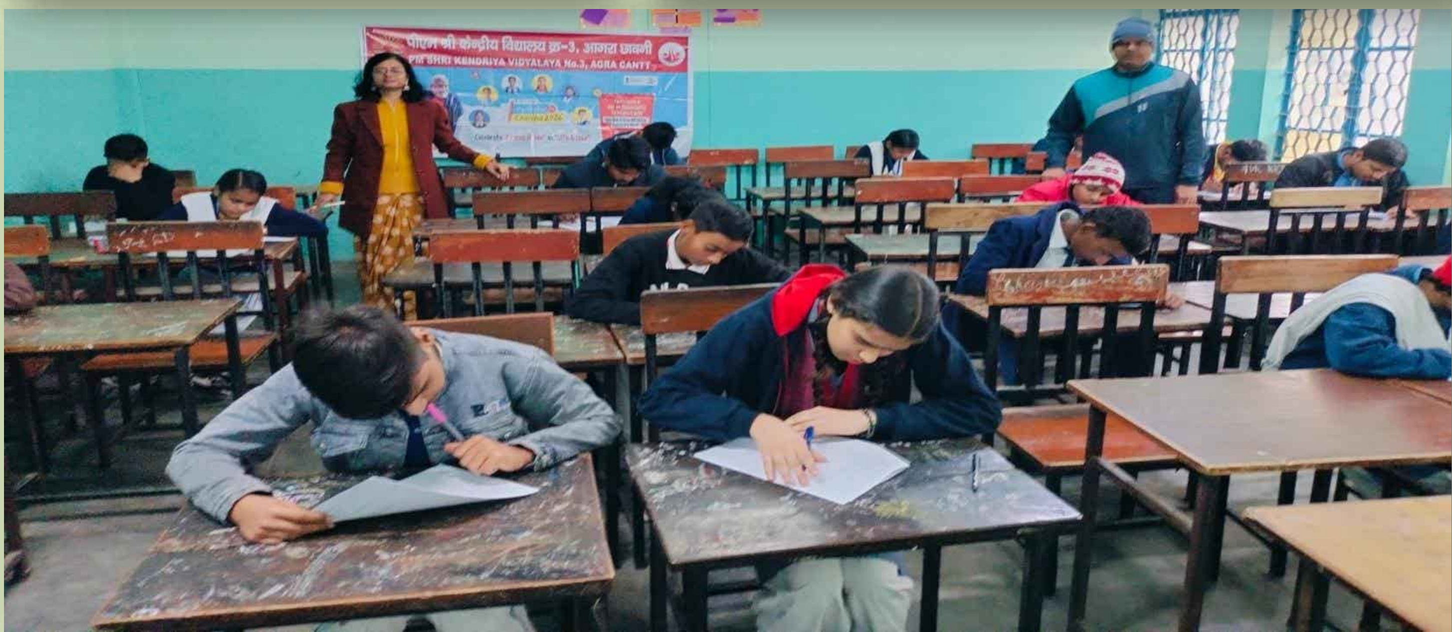

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम का प्रसारण

Prize Distribution Ceremony

&

Annual Creative Learning Activities

विद्यालय वार्षिक खेल दिवस

पीएम.श्री निरीक्षण

क्र. 3
YA NO. 3

श्री
क्र. 3
SHRI
ALAYA NO. 3

CAREER COUNSELING

पीएम श्री के अंतर्गत ' शैक्षिक भ्रमण '

विश्व चिंतन दिवस समारोह

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

गणतंत्र दिवस समारोह

विद्यालय परिवार

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3 आगरा छावनी
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA No. - 3 AGRA CANTT.